AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

कामकाजी महिलाओं की समस्या और सुझाव

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. मनीषा शुक्ला
सहायक संचालक
उच्च शिक्षा
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

भारत में कामकाजी महिलाओं को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उनमें वेतन असमानता शामिल है, जहाँ उन्हें अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में कम वेतन मिलता है और लैंगिक असमानता जो कार्यस्थल में उन्नति के कम अवसरों के रूप में प्रकट हो सकती है, और कई अन्य जो उनके करियर के विकास में बाधा डालती हैं। हालाँकि, उनकी सफलता कठोर होने और प्रतिशोध के साथ करियर का पीछा करने की परंपराओं से परे है। अधिक शहरी कामकाजी महिलाएँ इन समस्याओं को पहचानती हैं और पेशेवर व्यवसाय के माध्यम से आर्थिक स्वतंत्रता से परे पुरस्कारों की तलाश कर रही हैं। कई कामकाजी महिलाएँ अब सक्रिय रूप से काम के माध्यम से और काम में उद्देश्य और अर्थ की तलाश करती हैं।

मुख्य शब्द

कामकाजी महिला, परिवार, आर्थिक स्वतंत्रता, श्रमिक, वैवाहिक जीवन.

परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है। परिवार की केन्द्र बिन्दु महिला ही होती है, जिसे बालकों की प्रथम पाठशाला कहा जाता है। बालक के समाजीकरण, व्यक्तित्व विकास तथा धर्म एवं आध्यात्मिक तत्वों के प्रभाव आदि में महिला माँ के रुप में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परिवार में बालक जीवन के प्रति उच्च मानसिक दृष्टिकोण रखते है और पारिवारिक, सामाजिक मूल्यों को ग्रहण करते हैं। माँ ही बालक को अच्छे संस्कार, अच्छी शिक्षा, नैतिकता, मूल्य की शिक्षा आदि प्रदान करती है।

भारतीय समाज में हमेशा नारियों को सम्मान एवं आदर प्रदान किया गया है। भारतीय महिला पत्नी और माँ के साथ–साथ अब एक नई कामकाजी महिला की भूमिका को भी अपने में समाहित कर रही है।

सहस्राब्दी की महिला कामकाजी महिलाओं की चुनौतियों और समस्याओं की दहलीज को पार कर चुकी है, जैसे कि अब शिक्षक या नर्स की लिंग–पारंपरिक नौकरी करना। आज वह एक डॉक्टर के रूप में इलाज करती है, एक अंतरिक्ष यात्री के रूप में खोज करती है, एक इंजीनियर के रूप में सृजन करती है और एक वकील के रूप में जी–जान से लड़ती है और यह उसकी संभावनाओं की सतह को भी नहीं छूता है। वह पेप्सिको और आईसीआईसीआई जैसी कंपनियों को चलाती है। वह पूरे जर्मनी और कई अन्य देशों को भी चलाती है। वह अंतर–लिंग टेनिस खेलती है और वह लाखों लोगों के साथ मैराथन दौड़ती है – अक्सर चैरिटी के लिए – और

जीतती है। यहां भारतीय कामकाजी महिला की स्थिति दो पाटो में फँसे धुन के समान हो गई है। उसे कार्यालय और घर दोनों की आवश्यकताओं को पूरा करना होता है। यदि वह दोनो में सन्तुलन स्थापित करने में असमर्थ होती हैए तो उसे भारी निंदा का सामना करना पड़ता है। प्रत्येक कामकाजी महिला का घरेलू जीवन दयनीय होता है। यह अवधारणा पूर्णतः औचित्यपूर्ण नहीं है। आज भारतीय महिला सजगता और जिम्मेदारी से कार्यालय और घर के कार्यो को संभाले हुए है। घर को चलाने, पति के भार को कम करने और सुख–सुविधाओं से सम्पन्न जीवन जीने के प्रति भारतीय कामकाजी महिलाओं के प्रयत्न स्तुत्य है।

सहस्त्राब्दी की महिला हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है और परिदृश्य बदल रही है। यह विश्वास करना कठिन नहीं है कि पिछले कुछ दशकों में उसने नए करियर अपनाए हैं और अपने लिए एक रास्ता तय किया है। पेशेवर डिग्री और कामकाजी महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली कई समस्याओं पर काबू पाने के दृढ़ संकल्प से, वह नौकरी के विवरण का विस्तार कर रही है और स्वतंत्रता का आनंद ले रही है जो पिछली पीढ़ियों के लिए अब तक अज्ञात थी।

श्रम मानव की एक अनमोल पूंजी है और इस श्रम को करने वाला अर्थात 'श्रमिक' एक अनमोल पूंजी का मालिक होता है। श्रम की पूजा प्रत्येक समाज में की जाती है। स्वतंत्रोपरान्त बड़े पैमाने पर उत्पादन के प्रारंभ होने से महिला श्रमिकों के रोजगार के क्षेत्र में प्रवेश बड़ा है। देश के सामाजिक–सांस्कृतिक विकास के प्रत्येक चरण में महिलाओं का किसी न किसी रूप में अपना योगदान अवश्य रहा है। प्रत्येक प्रकार की अर्थ व्यवस्था में भी महिलाये आगे आई है। औद्योगिक एवं कृषि विकास से संबंधित महिला श्रमिक शक्ति के उपयोग की प्रक्रिया को अधिक बढ़ावा मिला है। परम्परागत समाजों के सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महिलाओं को जो समस्यायें पैदा होती गई, उन्होंने महिलाओं की जीवनशैली एवं कार्यशैली के निर्धारण में प्रमुख भूमिका निभाई है। महिलाओं को पहले गृहणी की भूमिका प्रदान की गई, फिर घरेलू कार्य के अतिरिक्त आर्थिक क्रियाकलापों से संबद्धता को जोड़ा गया। आर्थिक दृष्टि से कमजोर होने के कारण ही महिलाओं को श्रम करने के लिए विवश होना पड़ता है। प्रायः इनके परिवारों में सदस्यों की संख्या ज्यादा होती है, और परिवारों में पति बेरोजगार होते हैं या उनकी मूजदूरी कम होती है, या वे शराबी, कुमार्गी, जुआरी होते हैं, जिससे बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य व परिवार के भरण–पोषण की सम्पूर्ण जिम्मेदारी इन महिलाओं पर आ जाती है।

महिला श्रमिकों के जीवन पर कार्य स्थल की दशाओं का भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उनकी कार्यक्षमता का ह्रास होता है। मानसिक एवं शारिरीक रूप से स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। उनका सामाजिक जीवन नरक होता है। उनको वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सामंजस्य करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। स्वयं कामकाजी महिलाओं के व्यक्तिगत जीवन पर प्रभाव पड़ता है।

महिलाओं के कार्यरत रहने से उनकी सामाजिक तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि निश्चित रूप से प्रभावित हुई है। जहां एक और वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो गई वहीं दूसरी और अनेक समस्यायें भी उत्पन्न हुई है। जैसे अपने वैवाहिक जीवन व परिवार में सामंजस्य करना, पति को खुश रखना, बच्चों का पालन–पोशण करना, इसके अतिरिक्त घर व बाहर के आवश्यक कार्य। कामकाजी महिलाओं के पुरूषों के सम्पर्क में आने से चारित्रिक समस्यायें उत्पन्न हुई है। घर–परिवार में तनाव का वातावरण निर्मित हुआ है जिससे पारिवारिक विघटन बढ़ा है। बच्चों का ठीक ढंग से पालन–पोशण न हो पाने से वे अपराधी तक बन जाते हैं।

इसके विपरीत कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। नौकरी करने से उनकी पारिवारिक आय बढ़ती है साथ ही जीविकोपार्जन के साधन उपलब्ध हो जाते हैं। कुछ हद तक परिवार की आर्थिक तंगी दूर हो जाती है। कापाड़िया के अनुसार ''परिवार को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण पहलू महिलाओं का नौकरी करना है जो शिक्षा तथा आर्थिक दबावों के कारण सम्भव हो सकता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पहले तक महिलाओं के लिए वेतन वाली नौकरी करना अपमानजनक समझा जाता था परन्तु आज पुरानी पीढ़ियों के लोग भी यह चाहते हैं कि शिक्षित वहुऐं आयें और आय को बढ़ाने में सहायता दें।

निष्कर्ष

घरेलू कार्यों में पुरुषों को महिलाओं के साथ बराबरी से काम में हाथ बँटाना चाहिये। घर से बाहर, जैसे– ऑफिस, परिवहन के साधन इत्यादि की व्यवस्था इतनी सुरक्षित एवं 'वुमन फ्रैंडली' हो कि वे वहाँ सुरक्षित महसूस कर सकें। इनकी जैविक आवश्यकता को देखते हुए छुट्टियों की पर्याप्त व्यवस्था हो। संगठित क्षेत्रों में तो 'मातृत्व लाभ' अब अनिवार्य हो गया है परंतु असंगठित क्षेत्र में भी ऐसी कुछ व्यवस्था हो या फिर सरकार की ओर से कुछ वित्तीय सुरक्षा दी जाए। 'डॉमेस्टिक हेल्प' को विनयमित तथा सुरक्षित बनाया जाए, ताकि महिलाओं की सहायता हो सके तभी हम सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की अधिकाधिक भागीदारी बढ़ा सकेंगे और अरुंधति राय, चंदा कोचर, किरण मजूमदार की तरह अनेक महिला उद्यमी, लोक सेवक बन सकेंगी।

संदर्भ सूची

1. प्रभावती जड़िया (2000) *हिन्दु नारीः कार्यशीलता के बदलते आयाम,* आकांक्षा पब्लिशिंग, वीना (म.प्र.), पृ. 32।
2. बेगतारा अली (1958) *वूमेन इन इण्डिया,* न्यू दिल्ली प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 102।
3. बनर्जी, एन. (1980) *वूमेन वर्कस इन दि आलअरगानाइज्ड सेक्टर,* संस्कृत पी. कलकत्ता, पृ. 84।
4. वेदालंकार, हरिदत्त (1986) *हिन्दु परिवार मीमांसा,* रंजन प्रकाशन गृह, नई दिल्ली, पृ. 21।
5. मेमोरिया, चतुर्भुज (1977) *भारतीय श्रम समस्यायें,* साहित्य भवन, आगरा, पृ. 112।
6. मदन, जी.आर. (1986) *भारतीय सामाजिक समस्यायें,* विवेक प्रकाशन, जवाहर भवन, नईदिल्ली, पृ. 27।
7. सक्सेना, एस.सी. (1981) *श्रम समस्यायें एवं सामाजिक सुरक्षा,* सामाजिक सुरक्षा पेंशन, नियमावली, पृ. 38।

——==00==——